बिहार के ऐतिहासिक स्थल

BPSC BIHAR NAMAN

https://t.me/biharnaman

Santosh Kashyap

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE®
New Delhi

चंपारण की ऐतिहासिक भूमि से लेकर झारखण्ड के पलामू, उत्तरी छोटानागपुर तथा संथाल परगना प्रमंडलीय क्षेत्र और कैमूर की पहाड़ियों से मुंगेर–भागलपुर के पूर्वी ढ़लानों तक विस्तृत बिहार प्रदेश भारत राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव है। अति प्राचीन काल से ही बिहार, भारतीय इतिहास को संपूर्णता प्रदान करते आ रहा है। बिहार की भूमि पर न केवल महान साम्राज्यों की स्थापना और भारतव्यापी विस्तार और प्राचीनतम गणराज्यों की प्रतिष्ठा हुई बल्कि युग–युगान्तर तक सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र के रूप में इसने देश–विदेश में प्रसिद्धि हासिल की। बिहार के प्रत्येक कोने में समृद्धशाली इतिहास एवं संस्कृति के रज–कण बिखरे पड़े हैं। बिहार के कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक–सांस्कृतिक स्थल निम्नलिखित है:–

इतिहास के स्थल

धार्मिक स्थल

शैक्षणिक स्थल

सांस्कृतिक स्थल

अभिलेखीय स्थल

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

इतिहास के स्थल

❍ **बक्सर:** बिहार का बक्सर जिला एक पौराणिक और ऐतिहासिक स्थल है। पुरातात्विक खुदाई से प्राप्त अवशेष बक्सर की प्राचीन सभ्यता को मोहनजोदड़ो और हड़प्पा कालीन सभ्यता के साथ जोड़ते हैं। यह स्थान प्राचीन इतिहास में सिद्धाश्रम, वेदगर्भापुरी, करूष, तपोवन, चैत्रथ, व्याघ्रसर, बक्सर के नाम से भी जाना जाता है। इस शहर का नाम रामायण काल से भी जुड़ा है। बक्सर में गंगा नदी के किनारे चरित्रवन में महर्षि विश्वामित्र का आश्रम था। इसी आश्रम में उन्होंने राम, लक्ष्मण को धनुर्विद्या को शिक्षा दी थी। पुराणों के अनुसार यहीं पर श्रीराम ने ताड़का का वध किया था। बक्सर के पास ही अहरौली नामक स्थान है जहां देवी अहिल्या को श्रीराम ने अपने चरण स्पर्श मात्र से मुक्ति प्रदान किया था और अहिल्या ने पत्थर से अपने मानव शरीर को प्राप्त किया था। बक्सर का प्राचीन महत्व ब्रह्म पुराण और वराह पुराण में भी वर्णित है।

बक्सर भारत में ब्रिटिश सत्ता के उत्कर्ष का साक्षी रहा है। बक्सर की भूमि पर ही 15 सितंबर 1764 ई. को मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना और बंगाल के नवाब मीर कासिम, मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजाउद्दौल की संयुक्त सेना के बीच एक निर्णायक युद्ध हुआ था। बक्सर के युद्ध में ही भारत की राजनीतिक सत्ता ब्रिटिश शक्ति से हार गई और समूचा भारत देश अंग्रेजों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गया।

❍ **बिहार शरीफ:** बिहार स्थित नालंदा जिला का मुख्यालय बिहार शरीफ प्राचीन काल से ही भारत का महत्वपूर्ण नगर रहा है। यह नगर मस्जिदों, कब्रों के रूप में गुप्तकालीन इस्लामी वास्तुकला को समेटे हुए है। इसके अलावा यह प्राचीन ऐतिहासिक स्थल गौतम बुद्ध के जीवन से भी गहराई से जुड़ा है। इस शहर का प्राचीन नाम ओदंतपुरी था जो समकालीन समय में शिक्षा के महान केंद्र के रूप में विख्यात था। आठवीं शताब्दी के मध्य में पाल शासक धर्मपाल ने यहां ओदंतपुरी महाविहार की स्थापना की जिसे बौद्ध शिक्षा केंद्र के रूप में काफी प्रसिद्धि मिली। इस शिक्षण केंद्र में देश–विदेश के हजारों छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इस शहर में और भी कई शिक्षण संस्थानें थी जिसे विहार कहा जाता था। 1198 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस शहर और महाविहार

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

को नष्ट कर दिया। यह स्थान तुर्कों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में चला गया। इस स्थान के आसपास फैले आधुनिक विहारों के कारण ही तुर्कों ने इसे 'अर्ज-ए-विहार (विहारों की भूमि)' कहा और कालांतर में यह शहर बिहारशरीफ कहलाने लगा। बख्तियार खिलजी ने 1224-34 में बिहार शरीफ को अपनी राजधानी बनाया जिसके कारण सल्तनत काल में इसका महत्व काफी बढ़ गया और यह नगर सत्ता के प्रमुख केंद्र के रूप में जाना जाने लगा। 1541 में शेरशाह सूरी द्वारा राजधानी को बिहार शरीफ से पटना स्थानांतरित किए जाने के बाद से बिहार शरीफ का महत्व घटने लगा।

बिहार शरीफ एक पुरातात्विक स्थल भी है। यहां जगह-जगह बौद्ध विहारों के अवशेष बिखरे हुए हैं। 1569 में बना शरीफ-उद-दीन का मकबरा, सूफी संत शेख शर्फूदीन याहया मनेरी की दरगाह, गुप्त शासक स्कंदगुप्त का प्रस्तर अभिलेख, मलिक इब्राहिम वाया का मकबरा आदि यहां के प्रमुख पर्यटकीय व दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल है।

- **चौसा:** बिहार के बक्सर जिला में कर्मनाशा नदी के किनारे स्थित चौसा एक छोटा सा कस्बा है किंतु इससे जुड़ा ऐतिहासिक घटना क्रम इसे एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल बनाता है। इसी स्थान पर मध्यकाल में अफगान सरदार शेरखान एवं मुगल बादशाह हुमायूं के बीच 25 जून 1539 को चौसा का युद्ध हुआ था जिसमें हुमायूं, शेरखान के हाथों हार गया। भारत में मुगलों की यह पहली और सबसे निर्णायक पराजय थी। इस युद्ध में विजयी होने के बाद शेरखान ने शाह की उपाधि धारण की और शेरखान से शेरशाह हो गया। इस घटनाक्रम के एक वर्ष बाद शोरशाह ने 1540 में कन्नौज के युद्ध में हुमायूं को फिर से पराजित कर दिया। इस पराजय के बाद दिल्ली पर मुगलों का शासन कुछ समय के लिए समाप्त हो गया और दिल्ली पर अल्पकाल के लिए अफगानों का आधिपत्य स्थापित हो गया। यह पहला मौका था जब किसी बिहारी ने दिल्ली पर शासन किया और वह (शेरशाह) थोड़े दिन के लिए ही सही भारत का शहंशाह बना।

- **मिथिला:** मिथिला का सर्वप्रथम उल्लेख हिंदुओं के धर्म ग्रंथ रामायण में मिलता है। इस महाकाव्य में मिथिला को गंगा नदी के उत्तर में स्थित बिहार के प्राचीन जनपद की राजधानी के रूप में वर्णित किया गया है। वैदिकोत्तर काल में विदेह माधव अपने पुरोहित गौतम के साथ यहां आए थे और यही बस गए। इन्होंने ही पूर्वी भारत में आर्य सभ्यता का प्रचार किया था। आर्य जिस क्षेत्र में सबसे पहले बस गए वह क्षेत्र विदेह कहलाया और यही विदेह आगे चलकर मिथिला और तीरभुक्ति के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वाल्मीकि रामायण में मिथिला का संबंध राजा निमि के पुत्र मिथि से जोड़ा गया है। मिथि के वंशज मैथिल कहलाए। पौराणिक ग्रंथों में मिथि के द्वारा ही मिथिला के बसाए जाने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण में राजा जनक को विदेह कहा गया है और वे मिथिला के शासक थे। विष्णु पुराण में भी विदेह नगरी मिथिला का उल्लेख है। प्राचीन काल से ही मिथिला ज्ञान-विज्ञान का प्रमुख केंद्र रहा है। वर्तमान में सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, पूर्णिया, किशनगंज, अररिया आदि जिले मिथिला क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

- **चंपा:** बिहार के भागलपुर जिले में स्थित रेशम उद्योग के लिए प्रसिद्ध नाथनगर की पहचान प्राचीन कालीन चंपानगर के रूप में की गई है। कई साहित्यिक रचनाओं में इसका नाम मालिनी या मालिनी चंपा भी मिलता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में से एक जनपद अंग की प्रशासकीय राजधानी चंपा थी। महाभारत ग्रंथ में राजा पांडु के बड़े बेटे कर्ण को अंग का शासक बताया गया है। मगध साम्राज्य के विस्तार के क्रम में बिंबिसार ने अंग राज्य पर विजय प्राप्त करके चंपा को मगध राज्य में सम्मिलित कर लिया। उसके बाद

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

अजातशत्रु ने चंपा को अपनी राजधानी बनाया परंतु उसके पुत्र उदयन ने पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी स्थापित की।

चंपा नगर महात्मा बुद्ध और महावीर के धर्म प्रचार का प्रमुख केंद्र था। यहीं पर जैनों के 12वें तीर्थंकर वसुपूज्य का जन्म हुआ था। यहां से शुंगकालीन मूर्तियां भी प्राप्त हुई है। चंपा पर शासन करने वाले स्थानीय शासक करकुंड ने कुंड नामक सरोवर में पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठापना की थी। दशकुमार चरित से ज्ञात होता है कि चंपा में दंडिन के समय बहुत से धूर्त (विद्वान व चालाक) लोग रहते थे। हस्तायुर्वेद के रचयिता पालकाव्य मुनि लंकावतार सूत्र के रचनाकार विरज जिन और थेरीगाथा के रचयिता सोन कोलबिस का जन्म स्थान भी चंपा ही है। स्वयंभू ने चंपा में ही दशवैकालिक सूत्र की रचना की थी। जातक कथाओं में चंपा की समृद्धि तथा यहां के संपन्न व्यापारियों का अनेक स्थानों पर उल्लेख है। यहां पर बने रेशमी वस्त्रों का चीन तक व्यापार किया जाता था।

❍ **चिरांद:** यह बिहार के सारण जिले में स्थित एक प्रमुख पुरातात्विक स्थल है। अनुश्रुतियों के अनुसार चेर नामक राजा ने चिरांद की स्थापना की थी। कुछेक मौखिक कहानियों में इस स्थान को महाभारतकालीन महाराजा मयूरध्वज की राजधानी बताया गया है। कालिदास के रघुवंशम महाकाव्य से पता चलता है कि चिरांद गंगा और घाघरा (सरयू) नदी के संगम पर बसा हुआ था इसलिए चिरांद का धार्मिक महत्व भी है। चिरांद बिहार का एकमात्र ऐसा स्थल है जहां से नवपाषाणकालीन तथा ताम्रयुगीन अनेक अवशेष मिले हैं। 1962-63 में प्रो. बी. पी. सिन्हा द्वारा इस स्थल की खुदाई कराई गई थी जिसमें पांच प्रकार की संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं। पुरातात्विक अवशेषों में हिरणों के सींगों से निर्मित उपकरण, चित्रित मृदभांड, पत्थर के औजार, हथियार, आहत और ढाले हुए ताम्र सिक्के, धातुओं के उपकरण, जले हुए भूसे के निशान तथा पके हुए चावल के निशान प्राप्त हुए हैं। चावल के साक्ष्य से यह ज्ञात होता है कि चिरांदवासी चावल की खेती करते होंगे।

❍ **मुंगेर:** बिहार का मुंगेर जिला अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। मुंगेर की पहाड़ी पर मुद्गल ऋषि का आश्रम था जो मुद्गलगिरी कहलाता था। मुंगेर इसी मुद्गलगिरी का अपभ्रंशित नाम है। यह कई ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। पुरातत्ववेत्ता कनिंघम के मतानुसार सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री युवानच्वांग ने मुंगेर को 'लोहानिनिला' कहा है। 10वीं शताब्दी में यहां पालवंशी देवपाल का शासन था जिसके बाद से मुंगेर के महत्व में वृद्धि हुई। सल्तनतकाल में मुंगेर तुगलक वंश के नियंत्रण में हो गया। अफगान शासक शेरशाह ने 1533-34 के लगभग मुंगेर पर अधिकार कर लिया। इसके बाद यहां मुगलों का अधिकार हो गया। मुगलों ने यहां एक किले का निर्माण भी करवाया जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। मुगल काल के समय मुंगेर हथियार निर्माण का प्रमुख केन्द्र था। मुंगेर में आज भी हथियार एवं सिगरेट बनाने का कारखाना काम कर रहा है।

भारत के स्वाधीनता संग्राम के समय मुंगेर का विशेष सामरिक महत्व था। यहीं पर 15 दिसंबर 1762 को बंगाल के नवाब मीर कासिम और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच एक संधि हुई थी जो मुंगेर की संधि के नाम से प्रसिद्ध है। ईरानी यात्री बहबहानी 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में मुंगेर आया था। अपने विवरण में उसने मुंगेर शहर को पतनशील अवस्था की ओर अग्रसर बताया था। वर्तमान में मुंगेर कई धार्मिक मूल्य के स्थानों के लिए प्रसिद्ध है।

❍ **आरा:** वर्तमान में बिहार के भोजपुर जिलांतर्गत आरा शहर बिहार का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है जिसका धार्मिक महत्व भी है। यह आरंभ से ही वीरों की भूमि रही है। प्राचीन काल में यहां घना वन था जिसे आरण्य वन कहा जाता था। इस वन की चर्चा वाल्मीकि रामायण में भी की गई है। महाभारत के आदि पर्व में

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

ऐसा वर्णन मिलता है कि कुंती पुत्र भीम ने इस वन में रहने वाले राक्षस वकासुर का वध किया था। इसी दिन से इस वन के आसपास के क्षेत्र का नाम आरा पड़ गया। यद्यपि कई किदवंतियों के अनुसार आरण्य जंगल अथवा यहां निवास करने वाली आरण्य देवी (जंगल की देवी) के नाम पर इसका नाम आरा पड़ा। आरण्य देवी का प्रसिद्ध मंदिर आरा में आज भी है। जहां हिंदू धर्मावलम्बी विधि-विधान से पूजा अर्चना करते हैं। एक मिथक के अनुसार भगवान राम के गुरु आचार्य विश्वामित्र का आश्रम इसी क्षेत्र में था। श्री राम ने इसी आश्रम के आसपास के राक्षस/राक्षसी ताड़का, सुबाहु और मारीच का वध किया था।

अपने आरा निवास के दौरान बाबर ने 1529 में अफगान शासकों पर विजय प्राप्त करने के बाद आरा में ही अपना प्रथम राजनीतिक शिविर डाला तथा इस क्षेत्र को आबाद किया। बाबर के इस विजय को यादगार बनाने के लिए इस स्थान का नाम शाहाबाद रखा गया जिसका शाब्दिक अर्थ है- 'शाहों/शहंशाहों का शहर' उसके बाद अकबर ने शाहाबाद को अपने राज्य में मिला लिया। यद्यपि उसकी पकड़ इस क्षेत्र में ज्यादा मजबूत नहीं रही। अकबर के मंत्री मानसिंह ने शाहाबाद में राजस्व वसूली की काफी कोशिश की किंतु स्थानीय जमींदारों ने इसका प्रबल विरोध किया। जगदीशपुर तथा भोजपुर के शासकों ने मुगलों को पराजित किया था। भोजपुर के राजा ने जहांगीर के खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया था। इसका बदला लेने के लिए शाहजहां ने भोजपुर के राजा के उत्तराधिकारी का वध करवा दिया। इस घटना के बाद भोजपुर कुछ समय के लिए शांत रहा किंतु मुगलों के लिए कठिनाई बनी रही।

शाहाबाद जनपद के जगदीशपुर के राजा कुंवर सिंह ने 80 वर्ष की अवस्था में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ दानापुर के विद्रोही सिपाहियों का नेतृत्व किया और अंग्रेजी सेना को युद्ध में पराजित किया। कुंवर सिंह की वीरगाथाएं आज भी भोजपुरी के रज-कण सुनाते हैं। भारत की स्वतंत्रता के बाद प्रशासनिक दृष्टिकोण से भोजपुर का उदय वर्ष 1972 में हुआ, जब शाहाबाद जिला को दो अलग-अलग जिलों भोजपुर और रोहतास में विभाजित कर दिया गया। समकालीन समय में भोजपुर का पुनः विभाजन हुआ और बक्सर एक स्वतंत्र जिला बना। वर्तमान में भोजपुर जिला में तीन प्रशासनिक उप-विभाग है- आरा सदर, जगदीशपुर और पीरो। आरा शहर भोजपुर जिला का प्रमुख शहर और जिला का मुख्यालय है।

आरा में ही राजा भोज का प्रसिद्ध किला था जिसमें 52 गली और 56 दरवाजे थे। इसके निर्माण के तीन माह बाद ही मुगल सूबेदार अब्दुल्ला खां ने इसे नष्ट कर दिया। इस घटना का जिक्र मुंशी विनायक प्रसाद द्वारा लिखित ताबारीखे उज्जैनियां में भी किया गया है। आरा शहर का इतिहास इसके मध्य में स्थित प्रसिद्ध रमना मैदान की चर्चा किए किए बगैर पूरा नहीं हो सकता। पटना के गांधी मैदान की तरह ही आरा के रमना मैदान ने कई राष्ट्रवादी नेताओं को अखिल भारतीय स्तर की पहचान दिलाई है। इसी मैदान में ब्रिटेन के बादशाह जार्ज पंचम भी आए थे।

- **वैशाली:** गंगा नदी के उत्तर में बसा वैशाली पर्यटन, धर्म, संस्कृति और पुरातात्विक साक्ष्य को समेटे बिहार का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। यह महावीर की जन्मभूमि और आम्रपाली की रंगभूमि रही है। इसकी स्थापना विशाल नामक राजा ने की थी। ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी में यहां विश्व का प्रथम गणतंत्र स्थापित हुआ था। कालांतर में स्थापित वज्जी महासंघ की राजधानी बनने का गौरव भी वैशाली को प्राप्त है।

राजधानी पटना से 27 मील उत्तर में स्थित बसाढ़ से प्राचीन वैशाली गणराज्य के अवशेष मिले हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन काल में वैशाली भारत का एक समृद्ध नगर था। इस नगर के चारों और मोटी दीवारें

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

थी जिसमें जगह-जगह द्वार और गोपुर बने हुए थे। यह नगर तीन भागों में विभक्त था। पहले भाग में सोने के बुर्ज वाले, प्रसादों की प्रधानता दूसरे भाग में चांदी के बुर्ज थे तथा तीसरे भाग में तांबे के बुर्ज थे। अजातशत्रु के वैशाली पर आक्रमण करने के बाद इस नगर का महत्व घटने लगा किंतु गुप्त साम्राज्य के अधीन इसका पुराना महत्व वापस लौट आया। यह नगर बुद्ध गतिविधियों का प्रधान केंद्र भी था। फाहियान ने महात्मा बुद्ध के लिए आम्रपाली द्वारा निर्मित एक लघु मीनार का भी वर्णन किया है। यहां बहुत से स्तूप, शिलालेख एवं विहारों का निर्माण हुआ था। यहां से अशोक महान का विख्यात सिंह स्तम्भ भी पाया गया है। बुद्ध के परिनिर्वाण के 100 वर्षों के बाद वैशाली में ही द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था जिसमें बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया। वैशाली में बौद्ध धर्म से संबंधित दो महत्वपूर्ण घटना घटी- पहला वैशाली में ही सर्वप्रथम निर्णय लिया गया कि संघ में महिलाओं को शामिल किया जाए और दूसरा वैशाली संभवतः देश में प्रथम स्थान था जहां महिला तपस्विनियों के लिए मठ बनाए गए थे।

- **सासाराम:** बिहार के दक्षिण-पश्चिम में झारखंड की सीमा से लगे सासाराम, रोहतास जिला का मुख्यालय है। सासाराम एक आद्य-ऐतिहासिक स्थल है जिसकी पहाड़ी कंदराओं में मध्यपाषाण कालीन आदि मानवों ने हजारों वर्षों तक निवास किया था। सासाराम के पूर्व और दक्षिण स्थित नकटा जाफर बथान और गीता घर की पहाड़ी गुफाओं में आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्र आज भी देखे जा सकते हैं। यहां की चंदनपीर पहाड़ी में मौर्य कालीन शासक अशोक के लघु शिलालेख पाये गये हैं। यह शिलालेख उस समय लिखवाया गया था जब अशोक को बौद्धधर्म में दीक्षित हुए 256 रात्रि बीत चुके थे। मध्यकाल में 15वीं शताब्दी के आसपास सासाराम को विशेष प्रसिद्धि मिली जब दिल्ली के सिंहासन पर सिकंदर लोदी बैठा और सासाराम की जागीरें हसन खां सूर (शेरशाह का पिता) को मिला। शेरशाह का आरंभिक जीवन यहीं बीता। उसने यही से प्रशासन एवं राजस्व व्यवस्था संबंधी अनेक नवीन प्रयोग किये जो आगे चलकर उसकी शासन व्यवस्था एवं राजस्व सुधार का मुख्य आधार बना।

1540 में मुगल बादशाह हुमायूं को युद्ध में हराकर शेरशाह दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ। भारत का बादशाह बनने के बाद उसने जनकल्याणार्थ अनेकों कार्य किए। उसने सासाराम में अपने वालिद का मकबरा बनाया तथा पास में ही अपने भी मकबरे की नींव डाली जो कालांतर में शेरशाह के मकबरे के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह मकबरा पठान वास्तुकला के चरम उत्कर्ष को दर्शाती है। इस मकबरे की सुंदरता का बखान करते हुए अंग्रेज पुराविद् कनिंघम ने कहा था कि- ''शेरशाह का मकबरा (रौजा) वास्तुकला की दृष्टि से ताजमहल की तुलना में अधिक सुंदर है।''

अभिलेखीय/पुरातात्विक स्थल

- **केसरिया:** बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में स्थित केसरिया ऐतिहासिक और अभिलेखीय स्थल के रूप में महत्वपूर्ण है। केसरिया के पास पश्चिम दिशा में स्थित सागरडीह के एक टीले से एक प्राचीन स्तूप मिला है जो विश्व के सबसे बड़े प्राचीन बौद्ध स्तूप के नाम से प्रसिद्ध है। इस अभिलेखीय/पुरातात्विक स्थल को पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग द्वारा वर्ष 1958 में खोजा गया था। प्राप्त बौद्ध स्तूप को तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक ने बनवाया था। खुदाई के दौरान यहां से प्राचीन काल की कई अन्य चीजें प्राप्त हुई है जिनमें बुद्ध की मूर्तियां, तांबे की वस्तुएं, इस्लामिक सिक्के आदि प्रमुख है। इस स्तूप के आसपास रानीवास, केसर बाबा का मंदिर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल भी मौजूद है।

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

❍ **अपसढ़:** बिहार के नवादा जिले के वारसलीगंज प्रखंड में स्थित अपसढ़ गांव में राज्य का एक प्रमुख अभिलेखीय स्थल है। जहां से मगध के परिवर्ती गुप्तवंशी शासक आदित्यसेन के अभिलेख मिले हैं। इस अभिलेख में अंतिम गुप्त राजाओं और मौखरियों के बीच आपसी झड़प का वर्णन किया गया है। अभिलेख से ज्ञात होता है कि आदित्यसेन की माता ने अपसढ़ में एक बौद्ध विहार का निर्माण करवाया था। यहां से छठवीं शताब्दी में बना एक वृहद पूजा स्थल का अवशेष मिला है जिसकी दीवारों पर रामायण के दृश्य अंकित है।

❍ **बराबर की गुफाएं:** बिहार के गया में स्थित बराबर की गुफाएं चट्टानों को काटकर बनाई गई विहारों की श्रृंखला में सर्वप्राचीन है। इसमें सात प्राचीन गुफाएं प्रकोष्ठों के रूप में बनी हुई है जिसका प्रयोग विविध संप्रदायों जैसे- जैन संप्रदाय, बौद्ध संप्रदाय और आजीवक संप्रदायों के सन्यासियों द्वारा होता था। इन गुफाओं का निर्माण सम्राट अशोक और उनके पोते दशरथ के शासनकाल में किया गया था। बराबर की गुफाएं चैत्य गृहों और सभागृहों का प्रारंभिक स्वरूप माना जाता है। ये गुफाएं मौर्यकालीन स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इन गुफाओं में कुछ अन्य अभिलेख भी मिले हैं जिनमें मौखरी वंश के राजा अनंतवर्मन के शासनकाल की चर्चा की गई है। बराबर की गुफाओं में सुदामा गुफा, कर्ण चौपड़ की गुफा, लोमस ऋषि की गुफाएं तथा विश्व झोपड़ी प्रमुख है। इन गुफाओं की छत और दीवारों पर उच्च स्तरीय पॉलिस आज भी देखी जा सकती है।

❍ **लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़:** ये दोनों स्थान बिहार के पश्चिम चंपारण जिले में स्थित है। लौरिया अरेराज और लौरिया नंदनगढ़ से वैदिक काल के अपशिष्ट के अतिरिक्त प्राक् सिकंदरकालीन सिक्के और गुप्तकालीन मुहरें प्राप्त हुई हैं। इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी लगभग 5 किलोमीटर है। पुरातत्वविद् कनिंघम में यहां एक मुद्रालय होने की बात कही है जो संभवत: कुषाण नरेशों द्वारा स्थापित किया गया था। अशोक द्वारा स्थापित पांच मुख्य स्तम्भ लेखों में एक स्तम्भ इन स्थानों पर मिला है। लौरिया नंदनगढ़ का स्तम्भ लेख विकसित मौर्य कला का उदाहरण है। लौरिया नंदनगढ़ स्तूपों का क्षेत्र है। यहां से प्राप्त सुंडाकार स्तूप भारत तथा पूर्वी एशियाई देशों में अपने तरीके का प्राचीनतम उदाहरण है। नंदनगढ़ में बने इस स्तूप के आधार पर ही बंग्लादेश में स्थित पहाड़पुर एवं जावा के बोरोबुदुर में स्तूप का निर्माण हुआ था। इसकी निर्माण शैली से स्तूप और मंदिर स्थापत्य की पारम्परिक पद्धति में भिन्नता प्रारंभ होती है।

❍ **रामपुरवा:** बिहार के पश्चिम चंपारण जिले में बेतिया से लगभग 50 किलोमीटर उत्तर में स्थित रामपुरवा एक प्रमुख अभिलेखीय स्थल है। सम्राट अशोक ने अपने राज्यारोहण के 27 वें-28 वें वर्ष में सात स्तम्भलेखों की स्थापना की थी। इस सात स्तम्भलेखों में से दो रामपुरवा में थे। सर्वप्रथम श्री कार्लाइल ने 1872 में इन स्तम्भों का पता लगाया था तथा रामपुरवा की स्थितियों का विवेचन श्री कनिंघम ने अपने आर्कियोलॉजिकल रिपोर्ट्स भाग 16 में किया है। रामपुरवा स्थित अशोक स्तम्भों पर कोई भी अभिलेख नहीं है। इन स्तम्भों के शीर्ष भाग पर पशुओं की आकृतियां बनी है। एक स्तम्भ के ऊपर सिंह और एक पर सांड की आकृति अंकित है। रामपुरवा के शिलालेखों की रचनाशैली मौर्यकालीन स्थापत्य की विशिष्ट प्रकृति के द्योतक है।

❍ **अरेराज:** बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में स्थित अरेराज अपने समृद्ध संस्कृति व इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यह नेपाल देश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा से मात्र कुछ ही दूर है। यहां भगवान शिव का प्राचीन मंदिर है जो 'सोमेश्वर शिव मंदिर' कहलाता है। ऐसी मान्यता है कि सोमेश्वर नाथ कामनापरक पंचमुखी शिवलिंग है जिस पर सावन महीने में कमल का फूल और गंगाजल चढ़ाने के लिए काफी भीड़ जुटती है। अरेराज को एक सिद्धपीठ माना जाता है और इसकी मान्यता उत्तर बिहार और नेपाल के ज्योतिर्लिंगों में की जाती है। इस मंदिर में हिंदू धर्म

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

के अनेक रीति-रिवाज यथा मुंडन, उपनयन, संस्कार, विवाह आदि कार्य संपन्न कराए जाते हैं। इस मंदिर के पास ही एक संस्कृत महाविद्यालय और सरस्वती मंदिर भी स्थित है। इस मंदिर के 6 किलोमीटर दक्षिण में नारायणी नदी बहती है।

❍ **जगदीशपुर:** यह बिहार का एक पुराना नगर है जो भोजपुर जिला मुख्यालय आरा से 30 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह शहर जितना ऐतिहासिक है उतना धार्मिक भी। किंवदंती है कि द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने याज्ञवल्क्य की तपोभूमि में एक शिव मंदिर की स्थापना भी थी जिसे अब बाबा योगेश्वरनाथ धाम के नाम से जाना जाता है। यहां एक मनोरम एवं आकर्षक महाविहार मंदिर भी है। 11-12वीं सदी में जगदीशपुर सूफी परंपरा के फिरदौसी सिलसिला की गतिविधियों का केंद्र स्थल भी रहा है। यहां पर सूफी संत मखदूम याहिया मनेरी के वंशज शाह दौलत की मजार स्थित है जिसे छोटी दरगाह के नाम से जाना जाता है। जगदीशपुर शहर के पूरब में प्रसिद्ध बाबा दूधनाथ जी की समाधि स्थल भी मौजूद है। इब्राहिम खां काकर जिसे जहांगीर ने बिहार प्रांत का प्रांतपति नियुक्त किया था, ने यहां एक भव्य मकबरे का निर्माण करवाया था जो मुगल स्थापत्य कला के सर्वश्रेष्ठ नमूनों में से एक है। यह शहर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय बिहार के प्रमुख क्रांतिकारिक गतिविधियों का केंद्र भी था। बाबू कुंवर सिंह, अमर सिंह और आरा की जनता ने जिस बहादूरी से ब्रिटिश सत्ता से लोहा लिया था, उसकी चर्चा इतिहास के हर पन्नों पर दर्ज है।

❍ **देव:** यह बिहार के औरंगाबाद जिले में स्थित है। देव ग्रांड ट्रंक रोड से मात्र 6 किलोमीटर दक्षिण दिशा में है। इस शहर की पहचान यहां स्थित सूर्य मंदिर अथवा देवार्क मंदिर से है जो आस्था का एक प्रमुख केंद्र है। यहां स्थित पुराना किला देव राजाओं के इतिहास का बखान करता हुआ प्रतीत होता है। ऐसा कहा जाता है कि त्रेता युग में इक्ष्वाकु के पुत्र ऐल ने देव में सूर्य मंदिर का निर्माण किया था। ऐल के प्रारंभिक मंदिर के भग्नावशेषों पर सातवीं सदी में हर्षकालीन गुप्तवंशी शासक माधवगुप्त के पुत्र आदित्यसेन ने वर्तमान विशाल सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। इस मंदिर को कोणार्क शैली में चट्टानों को तराशकर पत्थर के कील पर बनाया गया है। इस मंदिर के दक्षिण में एक तालाब भी स्थित है। जहां पर हर वर्ष चैत और कार्तिक मास में छठ पूजा का आयोजन किया जाता है। देव के सूर्य मंदिर का सभामंडप उमंगा के अंतिम चंद्रवंशी राजा भैरवेन्द्र ने बनवाया था। इस मंदिर की विशेषता यह है कि इसका मुख्य द्वार पश्चिमोन्मुखी है जबकि मंदिरों का प्रवेश द्वार प्रायः पूरब दिशा की ओर होता है।

❍ **पावापुरी:** यह बिहार के नालंदा जिले में स्थित जैन धर्मावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ स्थल है। यह स्थान राजधानी पटना से 108 किलोमीटर दूर है। प्राचीन समय में इस स्थान को अपापुरी अर्थात पूण्यभूमि कहा जाता था। पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व में वर्धमान महावीर ने यहीं पर अपने जीवन के अंतिम समय व्यतीत किए थे। उनको मोक्ष की प्राप्ति भी यहीं हुई थी। उनके मोक्ष स्थान पर ही उनके बड़े भाई नंदिवर्धन ने एक जलमंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर पूरी तरह से पानी में बना हुआ मंदिर है जिसके चारों ओर कमल के विभिन्न रंगों वाले फूल दिखाई देते हैं। पावापुरी के जलमंदिर में भगवान महावीर की चरण पादुका रखी गई है जिसे भगवान मानकर पूजा की जाती है। पानी के भीतर बने इस मंदिर का निर्माण सफेद संगमरमर के पत्थरों से किया गया है। मंदिर में जाने के लिए सदर फाटक से मंदिर तक जंगलेदार पक्का पुल बना हुआ है।

❍ **मनेर:** पटना जिलांतर्गत छोटा-सा नगर मनेर पटना मुख्यालय से 25 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। प्राचीन काल में यह शिक्षा का प्रधान केंद्र था जहां दूर-दूर से लोग शिक्षा लेने आते थे। विख्यात सूफी संत पीर

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

हजरत मखदूम याहिया मनेरी का जन्म 13वीं शताब्दी में मनेर में ही हुआ था। यहीं पर उनकी पवित्र मजार है जो गंगा–जमुना तहजीब का बेजोड़ नमूना प्रस्तुत करता है। यहां पर हर धर्म के लोग चादर चढ़ाने आते हैं। देश में सूफी सिलसिले की शुरुआत का गवाह मनेर शरीफ दरगाह है। यह दरगाह गंगा, सोन और सरयू नदी के संगम पर स्थित है। मुगल प्रांतपति इब्राहिम खां काकर ने मनेर में एक मकबरा और एक मस्जिद का निर्माण करवाया था। 1616 ई. में निर्मित यह मकबरा मुगल स्थापत्य कला का एक बेहतरीन नमूना है।

❍ **राजगीरः** पटना से 100 किलोमीटर पूर्व–दक्षिण दिशा में पहाड़ियों और वनों के बीच बसा राजगीर नालंदा जिला का एक प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थान है। यह हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म के लिए समान रूप से लोकप्रिय और श्रद्धेय है। यह शहर बिहार के प्राचीनतम ऐतिहासिक शहरों में से एक है। वसुमतिपुर, बृहद्रथपुर, गिरिव्रजपुर और कुशाग्रपुर इसके प्राचीनतम नाम है। इस शहर को महाभारतकालीन मगध राजा जरासंध की राजधानी होने का भी गौरव प्राप्त है। राजगीर के ऊंचे पहाड़ी भाग पर जरासंध का अखाड़ा आज भी विद्यमान है जिसे देखने दूर–दूर से लोग यहां आते हैं। चेदि वंश के शासक वसुमित्र के बेटे बृहद्रथ ने मगध राज्य की स्थापना कर राजग्रह को अपने राज्य की राजधानी बनाया था। बिम्बिसार के राजा बनते ही राजग्रह/राजगीर का वास्तविक उत्थान शुरू हुआ। इस राजधानी की सुरक्षा के लिए बनी दीवार के अवशेष आज भी यहां मौजूद है।

पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर ब्रह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर मुनिसुब्रतनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, कल्याणक एवं 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रथम देशना स्थली भी रहा है। साथ ही भगवान बुद्ध की साधना भूमि भी राजगीर ही है। भगवान बुद्ध ने गृहकूट पर्वत पर अपने समकालीन मगध सम्राट बिंबिसार को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। इसी स्थल पर जापानी बौद्धों ने 1969 ई. में विश्व शांति स्तूप का निर्माण करवाया था। समूचे विश्व में बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा पालन किए जाने वाले बौद्ध धर्म नियम के परंपरा की शुरुआत राजगीर से ही हुई थी। यहीं से बुद्ध और बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए आराम और विहार के निर्माण का चलन शुरू हुआ था। महात्मा बुद्ध के निधन के बाद राजगीर के सप्तपर्णी गुफा में 487 ईसा पूर्व में महाकश्यप की अध्यक्षता में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था। इस संगीति में विनयपिटक और धर्मसूत्र को स्थिरता प्रदान की गई थी।

राजगीर को चारों तरफ से पांच पहाड़ियों विपुलगिरी, रत्नागिरी, उदयागिरी, सोनगिरी और वैमारगिरी ने घेरे रखा है जिसमें इसकी सौंदर्यता और अधिक बढ़ जाती है। इसके आसपास के ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के स्थलों में सप्तपर्णी गुफा, विश्वशांति स्तूप, सोन भंडार गुफा, मणियार मठ, बिम्बिसार की जेल, नौलखा मंदिर, घोड़ाकटोरा डैम, जापानी मंदिर, तपोवन, जेठियन बुद्ध पथ, बेनुवन, बेनुवन विहार, सुरक्षा दीवार, जैन मंदिर, सामस स्थित तालाब, गर्म जल के अनेकों कुंड, झरने और तेलहार आदि देखे जा सकते हैं।

25 नवम्बर 2018 ई. को बिहार के पहले इको टूरिस्ट स्थल घोड़ाकटोरा डैम, राजगीर में भगवान की बुद्ध की 70 फुट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह देश की दूसरी सबसे ऊंची बुद्ध की प्रतिमा है जिसका निर्माण उत्तर प्रदेश के चुनार से लाए गए गुलाबी रंग के बलुआ पत्थर से किया गया है। महात्मा बुद्ध की यह प्रतिमा धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में बनाई गई है। ध्यान रहे कि बिहार के बोधगया और उत्तर प्रदेश के सारनाथ में बुद्ध की 80–80 फुट ऊंची प्रतिमायें है।

❍ **सीतामढ़ीः** हिन्दू पौराणिक कथाओं में सीतामढ़ी एक पवित्र धार्मिक स्थान है। यहीं पर जगत–जननी सीता का जन्म हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि त्रेता युग में जब राजा जनक बारिश के लिए इन्द्र को खुश करने

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

हेतु सीतामढ़ी स्थित खेत में सोने का हल चला रहे थे जब सीता जी भूमि से प्रकट हुई थी। यह शहर आस्था का एक अभूतपूर्व केंद्र है जहां प्रतिवर्ष वैशाख नवमी को भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यहां दो स्थानों पहला जानकी स्थान और दूसरा पुनौरा धाम में सीता और श्रीराम का भव्य मंदिर है। यहीं पर उर्विजा कुंड और सीता सरोवर भी स्थित है जिसकी पूजा होती है।

- **सिंहेश्वर स्थानः** बिहार के मधेपुरा जिला में स्थित सिंहेश्वर स्थान धार्मिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व रखता है। यहां भगवान शिव का प्राचीन मंदिर है जहां सावन के महीनें में विशेष रूप से भक्तों की भीड़ जमा होती है। वराह पुराण के अनुसार भगवान शिव को ढूंढते हुए इंद्र के साथ विष्णु और ब्रह्मा यहां पहुंचे थे किंतु शिव एक सुंदर हिरण का रूप धारण करके यहां के वनों में विचरण करने लगे। तीनों देवताओं को यह पता लग गया कि हिरण ही भगवान शिव है। इन्द्र ने हिरण का अनुभाग, ब्रह्मा ने मध्य भाग और विष्णु ने निम्न भाग पकड़ा। हिरण के तीनों भाग इन देवताओं के हाथों में रह गये और शिव गायब हो गये। तीनों देवताओं ने अपने-अपने हाथ में आए भाग को यहीं स्थापित कर दिया और यह स्थान श्रृंगेश्वर स्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में यह सिंहेश्वर हो गया। इस मंदिर में जो शिवलिंग है उसे किसी ने स्थापित नहीं किया है वरन् वह स्वयं अवतरित हुआ हैं। स्वयं अवतार रहने एवं देवता द्वारा निर्मित मंदिर होने के कारण कोसी नदी के भयंकर बाढ़ में भी मंदिर ज्यों का त्यों रह गया। अंततः कोसी नदी को ही अपना मार्ग बदलना पड़ा। यह स्थान श्रृंगी ऋषि की तपोभूमि भी है उनके द्वारा निर्मित सात हवन कुंड यहां आज भी मौजूद है।

- **सोनपुरः** बिहार के सारण जिले में स्थित सोनपुर, यूं तो विश्व प्रसिद्ध पशु मेले के लिए जाना जाता है किंतु इस स्थान का धार्मिक महत्व भी है। सोनपुर में स्थित हरिहरनाथ मंदिर दुनिया का इकलौता ऐसा मंदिर है जहां हरि (विष्णु) और हर (शिव) की एकीकृत मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस मंदिर की स्थापना स्वयं ब्रह्मा ने की थी। गंगा और गंडक नदी के संगम पर गंडक के पश्चिमी अथवा दाहिने किनारे पर स्थित सोनपुर को हरिहर क्षेत्र भी कहा जाता है। राम और लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र के साथ इसी स्थान पर गंगा को पार करके जनकपुर गये थे। प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को स्नान के साथ ही हरिहर क्षेत्र मेला और छत्तर मेला शुरू हो जाता है जहां छोटे-बड़े सभी प्रकार के पशुओं की खरीद बिक्री की जाती है। महान सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने भी इस मेले से बैल, घोड़े, हाथी और हथियारों की खरीदारी की थी। 1857 की लड़ाई के समय यहीं से अरबी घोड़े हाथी और हथियारों का संग्रह किया जाता था। यह एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है जिसे बिहार सरकार अपनी देखरेख में आयोजित करती है।

शैक्षणिक स्थान

- **विक्रमशिला महाविहारः** पाल शासन काल के समय विक्रमशिला एक प्रमुख बौद्ध महाविहार/शिक्षा केंद्र था। यह भागलपुर के कहलगांव अनुमंडल के अंतीचक गांव में अवस्थित है। इस महान शिक्षण केंद्र की स्थापना 8वीं शताब्दी में पालवंश के शासक धर्मपाल ने की थी। इस विश्वविद्यालय शिक्षण केन्द्र को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। यह शिक्षण केन्द्र बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से संबंधित था। यह एक आवासीय शिक्षा केन्द्र था जिसकी सहायता के लिए समीपस्थ गांव अनुदान के रूप में प्रदान किये गये थे। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में द्वार परीक्षा की प्रथा प्रचलित थी। केवल उन्हीं शिक्षार्थियों को प्रवेश दिया जाता था जो द्वार पर खड़े द्वारपाल/द्वारपंडित के प्रश्नों का सही-सही जवाब देते थे। यहां लगभग 160 विहार थे जिनमें अनेक विशाल प्रकोष्ट बने हुए थे। इस विश्वविद्यालय में धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्वज्ञान, व्याकरण आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। इस विश्वविद्यालय के प्रकांड विद्वानों में दीपांकर ज्ञान, श्री अतिस, रत्नवज्र, रत्नाकर, जेटारी, बुद्ध

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

ज्ञानपाद, वैरोचन, रक्षित, अभयंकर गुप्त आदि शामिल थे। 12वीं सदी में यह महाविहार एक विराट शिक्षण संस्था के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। इस समय यहां 3000 विद्वानों की एक समिति मिलकर महाविहार की परीक्षा, शिक्षा, अनुशासन आदि का प्रबंध करती थी। 13वीं सदी की शुरुआत में तुर्क लड़ाका बख्तियार खिलजी के आक्रमण के कारण यह महाविहार पूर्णरूपेन नष्ट हो गया

1960 में पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर बी.पी. सिन्हा ने अपने 50 शिक्षकों और छात्रों की टीम के साथ यहां विभिन्न चरणों में खुदाई की जिसमें महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए। इसके बाद भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग ने यहां की खुदाई शुरू की। इस खुदाई में मुख्य स्तूप, मनौती स्तूप, तिब्बती धर्मशाला, छात्रावास परिसर, वातानुकूलित पुस्तकालय, प्रवेश द्वार, ध्यान कक्षों के अलावा कई हिंदू मंदिर के स्थायी अवशेष प्राप्त हुए हैं। भव्य विन्यास की दृष्टि से विक्रमशिला महाविहार, बांग्लादेश स्थित सोमपुर महाविहार से काफी मिलता-जुलता था।

❍ **नालंदा महाविहार:** बिहार के नालंदा जिले में स्थित नालंदा महाविहार पांचवी से बारहवीं शताब्दी तक बौद्ध शिक्षा का महान केन्द्र था। यह विश्व का प्राचीन विश्वविद्यालय है। ईसा पूर्व में यहां के प्रावारिक आम के बगीचों में महात्मा बुद्ध ने सात माह व्यतीत किये थे। यह स्थान बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र की जन्मभूमि है। सारिपुत्र की पुण्य स्मृति में सम्राट अशोक ने यहां के नालक ग्राम में एक चैत्य का निर्माण करवाया था। कालांतर में गुप्तवंशी शासक कुमारगुप्त प्रथम ने पांचवीं शताब्दी में यहां एक महाविहार का निर्माण करवाया जिसे नालंदा महाविहार कहा गया। यह महाविहार लगभग 300 वर्षों तक शिक्षा की ज्योति से विश्व को प्रकाशित करता रहा। महाविहार को गुप्त एवं मौखरि राजाओं तथा राजा हर्षवर्धन ने निरंतर आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई। इन्हीं के मदद से यहां अनेक भवनों, विहारों और मंदिरों का निर्माण करवाया गया। कन्नौज के शासक यशोवर्मन और बंगाल के पाल नरेश धर्मपाल और देवपाल का भी संरक्षण इस महाविहार को प्राप्त था। जावा, सुमात्रा के शैलेन्द्र शासक बलपुत्रदेव ने भी इसे संरक्षण प्रदान किया था। 1193 में मुस्लिम आक्रमणकारी ने इसे नष्ट कर दिया। अगर इस विश्वविद्यालय/महाविहार को नष्ट नहीं किया जाता तो यह विश्व के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों इटली की बोलोना (1088), काहिरा की अल-अजहर (972) और ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (1167) से भी कुछ सदियों पुरानी होती।

नालंदा महाविहार के भग्नावेश पर 20 नवंबर 1951 को नव नालंदा महाविहार की स्थापना की गई। जहां पालि एवं बौद्ध धर्म के अध्ययन के निमित्त स्नातकोत्तर शिक्षण एवं शोध की पढ़ाई कराई जा रही है। भारत सरकार ने स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में 1994 में इसका अधिग्रहण कर लिया। 13 नवंबर 2006 में यूजीसी ने नव नालंदा महाविहार को सम-विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की। सितंबर 2014 से इस विश्वविद्यालय में 'स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज' और 'स्कूल ऑफ इकोलॉजी एनवायरमेंट' की पढ़ाई कराई जा रही है। नव नालंदा महाविहार को यूनेस्को द्वारा 15 जुलाई 2016 में विश्व धरोहर सूची में शामिल कर लिया गया है।

❍ **योग विश्वविद्यालय अथवा बिहार स्कूल ऑफ योग:** बिहार के मुंगेर जिला में गंगा नदी के तट पर स्थित योग विश्वविद्यालय ने भारत की समृद्ध परंपरा और विरासत को संभाले रखा है। इसकी स्थापना 1964 में स्वामी सत्यानंद ने की थी। इसे विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। यह स्कूल अथवा विश्वविद्यालय केवल बिहार तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह देश के विभिन्न कॉलेज, जेलों, अस्पतालों और अन्य कई संस्थाओं में लोगों को योग विद्या का प्रशिक्षण देता है। यहां योग के क्षेत्र क्षेत्र में नित नए प्रयोग और

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

अनुसंधान किए जाते हैं। वर्तमान में इस योग शिक्षा केंद्र से प्रशिक्षित 14000 से अधिक शिष्य और 1200 से अधिक योग शिक्षक देश-विदेश में योग ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। सांख्य, पतंजलि और गीता के योग दर्शन पर आधारित यह संस्थान विज्ञान, चिकित्सा और मनोविज्ञान का समन्वय कर आज योग की व्यवहारिक शिक्षा दे रहा है। विश्व के 100 से अधिक देशों में इसकी शाखाएं हैं। योग को मिली विश्वव्यापी प्रसिद्धि को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून की तिथि को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया है।

सांस्कृतिक स्थल

❍ **गया:** पटना से लगभग 100 किलोमीटर दक्षिण में स्थित गया बिहार का एक प्रमुख ऐतिहासिक व सांस्कृतिक नगर है। यह नगर फल्गू नदी के पश्चिमी तट पर बसा है। यह हिंदुओं का प्रमुख तीर्थस्थान भी है। गया मुख्य रूप से श्राद्ध एवं पिंडदान के लिए प्रसिद्ध है। पितृपक्ष (आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष की पूर्णिमा से अमावस्या तक) के अवसर पर यहां हजारों श्रद्धालु पिंडदान करने आते हैं। ऐसी मान्यता है कि गया में पिंडदान करने से पितरों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। कन्या स्मृति, शंख स्मृति, लिखित स्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में गया में किए जाने वाले पिंडदान के महत्व को बताया गया है। यहां पहाड़ों एवं नदियों में पिंडदान किया जाता है। गया स्थित अनेक पहाड़ों में ब्रह्मयोनी पहाड़ सर्वप्रमुख है जहां सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने पिंडदान किया था। ब्रह्मयोनी पहाड़ के नीचे अक्षयवट वृक्ष है। इसी पहाड़ी की तलहटी में कपिल धारा आश्रम और रुक्मणी तालाब है जहां बोधगया जाने के क्रम में महात्मा बुद्ध ने तपस्या की थी। गया में ही रामशिला पहाड़ी स्थित है जिस पर बहुत से मंदिर बने हैं। यहां राम-लक्ष्मण ने अपने पूर्वजों का पिंडदान किया था। यह नगर सनातन धर्म के वैष्णव, शैव शाक्य संप्रदायों के लिए भी उतना ही श्रद्धेय है जितना बौद्ध धर्म के लिए। यहां माँ मंगला, नागेश्वरी, बगलामुखी, दु:खहरणी एवं माँ शीतला का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। शीतला मंदिर में भगवान सूर्य की प्रतिमा स्थापित है। गया के पास स्थित ताराडीह से खुदाई के पश्चात गुप्तकाल की मृणमुद्रा प्राप्त हुई है जिस पर तीन स्तूपों के नीचे बौद्ध मंत्र उत्कीर्ण है। एक अन्य मृणमुद्रा स्तूप पर बुद्ध को ध्यान की अवस्था में देखा जा सकता है। स्तूप के ऊपर दोनों ओर से दो गंधर्व इसे स्पर्श करने का प्रयास कर रहे हैं।

गया का प्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह मंदिर भगवान विष्णु के पांव के निशान के ऊपर बना है। वर्तमान में इस मंदिर की जो संरचना दिखाई देती है उनका निर्माण इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1765 में करवाया था। यह मंदिर काले पत्थर का है। मंदिर का कलश, ध्वज और ध्वजस्तम्भ सोने का है जबकि दरवाजों पर चांदी के पत्थर जड़े हुए हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान गया क्रांतिकारी आतंकवाद का प्रमुख केंद्र था। राष्ट्रवाद को प्रबल बनाने के उद्देश्य से यहां से 'चिंगारी' नामक क्रांतिकारी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। 1928 में गया के 17 क्रांतिकारियों को काला पानी की सजा दी गई थी।

❍ **बोधगया:** गया शहर से 9 मील दक्षिण निरंजना नदी के तट पर बोधगया अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम उरूबेला था। यह बिहार में स्थित एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। उरूबेला में ही फूलों से भरे शालवन में स्थित पीपल वृक्ष के नीचे गौतम को ज्ञान की प्राप्ति (531 ई.पू.) हुई थी और वे बुद्ध के रूप में प्रतिष्ठित हुए। जिस वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था वह वृक्ष बोधिवृक्ष और यह स्थान बोधगया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बोधगया महात्मा बुद्ध की जीवनयात्रा से संबंधित अष्ट महास्थानों में से एक है। मौर्य शासक अशोक ने बुद्ध की जीवनयात्रा से संबंधित स्थलों की धर्मयात्राएं की। इसी क्रम में वह अपने शासन के 10वें वर्ष में यहां आया था और यहां एक बौद्ध विहार की स्थापना की थी। बाद के कुषाण और गुप्त शासकों ने भी बोधगया में निर्माण कार्य करवाया। समुद्रगुप्त के शासनकाल में श्रीलंका के राजा मेघवर्मा ने यहां एक विशाल महाविहार बनवाया था। 17वीं

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

सदी में गौड़ शासक शशांक ने इस बौद्ध धार्मिक स्थल को काफी क्षति पहुंचाया और यहां के बोधिवृक्ष को जड़ से कटवा दिया। बाद में स्थानीय शासक पूर्णबर्मा ने उसी स्थान पर दूसरा वृक्ष लगवा दिया। वर्तमान का बोधिवृक्ष इसी दूसरे वृक्ष का विकसित रूप है। अर्थात् वर्तमान का बोधिवृक्ष मूल वृक्ष के पांचवीं पीढ़ी का पेड़ है।

बोधगया में सबसे प्रसिद्ध व दर्शनीय महाबोधि मंदिर है। जिसका निर्माण तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक द्वारा कराया गया था। वर्तमान में अवस्थित मंदिर पांचवीं और छठी शताब्दी में बनाया गया है। यह मंदिर ईंटों से निर्मित सबसे प्रारंभिक बौद्ध मंदिरों में से एक है। यह मंदिर आर्य और द्रविड़ शैली का सम्मिलित रूप है। यह मंदिर 80 फीट लंबी, 76 फीट फीट चौड़ी और 30 फीट ऊंची चौड़ाकार कुर्सी पर बना है जो नीचे से 180 फीट ऊंचा है। मंदिर में पूर्व दिशा की ओर मुख किए वज्रासन पर बैठे महात्मा बुद्ध की मूर्ति शांतिभाव मुद्रा में है। मंदिर के पीछे भूमि पर उसकी दीवार से लगा हुआ बौद्ध सिंहासन नामक चबूतरा है। पीपल का पवित्र वृक्ष इसी चबूतरे से दो-तीन गज पश्चिम दिशा में है। 1860 ई. में जब महान पुरातत्वशास्त्री कनिंघम ने इसे खोजा था, तब इस मंदिर का निचला हिस्सा पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका था। बाद में इस मंदिर की मरम्मत कराई गई और काफी परिश्रम के बाद इसे पुरानी अवस्था में लाया गया। बोधगया मंदिर परिसर में ही जापानी, थाईलैंड, म्यांमार आदि देशों का बौद्ध मठ स्थापित है। बोधगया की सांस्कृतिक महत्ता को देखते हुए वर्ष 2002 में यूनेस्को द्वारा बोधगया के महाबोधि विहार को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

नोटः 10 जून 2019 तक बिहार में केवल दो विश्व विरासत स्थल थे। 1. महाबोधि विहार 2. नव नालंदा महाविहार

❍ **पाटलिपुत्रः** बिहार की वर्तमान राजधानी पटना ऐतिहासिक काल में पाटलिपुत्र के नाम से प्रसिद्ध था। पाटलिग्राम, कुसुमपुर, पाटलीपट्टन, पुष्पपुर, पटना, अजीमाबाद आदि इसके अन्य नाम है। भारत में ऐसे बहुत कम ही नगर है जिसका 600 ई.पू. से पुराना का इतिहास रहा हो। पाटलिपुत्र का इतिहास भी 2500 वर्षों से पुराना है। मगध के राजा अजातशत्रु ने गंगा, गंडक और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र में एक फौजी दुर्ग का निर्माण करवाया था। लिच्छवियों के लगातार हो रहे आक्रमण से पाटलिग्राम को बचाने के लिए इस दुर्ग का निर्माण किया गया था। अजातशत्रु के वंशज उदयन ने इस स्थल की विशिष्ट सामरिक व्यापारिक और राजनीतिक स्थिति के कारण इसे मगध राज्य की राजधानी बनाया और यह पाटलिपुत्र के नाम से जाना जाने लगा। यह स्थिति मौर्य और गुप्तकाल में भी यथावत बनी रही।

मौर्य वंश के शासनकाल में पाटलिपुत्र के गौरवशाली इतिहास की शुरुआत होती है। चंद्रगुप्त मौर्य के शासन के काल में इस नगर के गौरव में अधिक वृद्धि हुई। चंद्रगुप्त के दरबार में रहने वाले यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने पाटलिपुत्र नगर की भव्यता का विवरण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है- ''9.5 मील लंबे और 1.75 मील चौड़े इस नगर के चारों ओर 60×45 फिट की गहरी खाई थी। इस खाई में नगर की रक्षा के लिए सोन नदी का पानी भरा रहता था। नगर के चारों तरफ लकड़ी की दीवारें थी जिसमें 570 बुर्ज एवं 64 द्वार थे। मौर्य राजा का महल समकालीन विश्व के अन्य राजमहलों को टक्कर देने वाला था। राजमहल में विभिन्न रंगों वाली फूलों के बगीचे थे। इस काल में 30 सदस्यीय परिषद थी जो विभिन्न समितियों के माध्यम से नागरिकों की सुविधा का ध्यान रखती थी। यूनानी इतिहासकार ने इस नगर को पालिब्रथा या पोलिब्रोथा और चीनी इतिहासकार ने इसे 'व्यू' कहा है।''

बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद लगभग 200 वर्षों बाद पाटलिपुत्र में ही बौद्ध धर्म ने अपना अंतर्राष्ट्रीय रूप धारण

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

किया था। सम्राट अशोक के शासनकाल में यहां 248 ई. में मोगलिपुत्त तिस्य की अध्यक्षता में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था। गुप्तों के शासनकाल में पाटलिपुत्र नगर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महानतम केंद्र था। गुप्तवंश के पतन के बाद इस नगर का गौरव और प्रसिद्धि भी खत्म होने लगा। हूण राजा दुर्देव ने पाटलिपुत्र नगर को आग लगा कर नष्ट कर दिया। बाद में बंगाल के पाल नरेश धर्मपाल ने पाटलिपुत्र के पुर्ननवीकरण का प्रयास किया।

मध्यकाल में मुगल शासक ने भी अपना नियंत्रण पाटलिपुत्र में बनाए रखा। इस काल में सबसे उत्कृष्ट समय तब आया जब शेरशाह सूरी ने इस नगर को पुनर्जीवित करने की सफल कोशिश की। इस नगर की भौगोलिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए शेरशाह सूरी ने यहां गंगा के किनारे एक किला बनवाया (वर्तमान में यह नष्ट हो चुका है) और पाटलिपुत्र का नाम पटना कर दिया। उसने पटना को सूबे की राजधानी बनाकर यहां एक सूबेदार नियुक्त कर दिया। 1575 में मुगल बादशाह अकबर ने बिहार को एक सूबे का दर्जा दिया तथा पटना को इसकी राजधानी बनाया। अकबर के राज्य सचिव तथा आईने-अकबरी के लेखक अबुल फजल ने इस नगर को कागज, पत्थर तथा शीशे का संपन्न औद्योगिक केन्द्र के रूप में वर्णित किया है। 18वीं शताब्दी में मुगल बादशाह औरंगजेब ने अपने पोते मोहम्मद अजीम के अनुरोध पर 1704 में इसका नाम अजीमाबाद कर दिया। अजीम उस समय पटना का सूबेदार था। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही पटना पर बंगाल के नवाबों का अधिकार हो गया जिन्होंने क्षेत्र पर भारी कर लगाया किंतु इसे वाणिज्यिक केंद्र बने रहने की छूट दी।

अंग्रेजों ने रेशम तथा कैलिको/कालियन (एक प्रकार का सादा बुना हुआ कपड़ा जिसे कपास को बिना परिष्कृत किए ही बनाया जाता था) के व्यापार के लिए यहां फैक्ट्री खोली। शीघ्र ही यह नगर पोटेशियम नाइट्रेट (साल्ट पीपर) का प्रमुख व्यापारिक केंद्र बन गया। बक्सर के निर्णायक युद्ध के बाद पटना ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन चला गया और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य का केंद्र बन गया। 1912 ई. में बंगाल विभाजन के बाद पटना, उड़ीसा तथा बिहार का संयुक्त राजधानी बना। 1936 ई. में उड़ीसा, तथा नवम्बर 2000 में झारखंड इससे अलग होकर नवीन राज्य बना।

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

43. भोजपुर जिला के जगदीशपुर में मुगल स्थापत्य शैली में बने अवस्थित मकबरे का निर्माण किसने करवाया था?

(a) जहांगीर (b) कुंवर सिंह
(c) शेरशाह (d) इब्राहिम खां काकर
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

44. बिहार से गुजरने वाली जी.टी. रोड़ के पास प्रसिद्ध सूर्य मंदिर अवस्थित है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि इसका मुख्य द्वार पश्चिम की ओर खुलता है। यह मंदिर राज्य के किस जिले में स्थित है?

(a) रोहतास (b) कैमूर
(c) औरंगाबाद (d) गया
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

45. पावापुरी स्थित जलमंदिर किसे समर्पित है?

(a) महात्मा बुद्ध को (b) महावीर स्वामी को
(c) शंकर देव को (d) ब्रह्मा को
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

46. विख्यात सूफी संत पीर हजरत मखदूम याहया मनेरी की मजार बिहार में कहां स्थित है?

(a) पटना (b) गया
(c) नालंदा (d) सीतामढ़ी
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

47. बिहार का यह स्थान धार्मिक सौहार्द्र का सूचक है। यह बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्म मतानुयायियों के लिए समानरूप से लोकप्रिय व प्रसिद्ध है। उक्त कथन किसके विषय में कहा गया है?

(a) नव नालंदा (b) राजगीर
(c) बसाढ़ (d) वैशाली
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

48. सीताजी का जन्म स्थान कहां है?

(a) भागलपुर (b) जनकपुर
(c) वैशाली (d) मुजफ्फरपुर
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

49. विक्रमशिला महाविहार की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?

(a) गुप्त शासकों द्वारा (b) मुगल शासकों द्वारा
(c) मौखरि शासकों द्वारा (d) लिच्छवि नरेश द्वारा
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

50. निम्नलिखित में से कौन से/सी बौद्ध धर्म के शाखा की पढ़ाई विक्रमशिला महाविहार में होती थी।

(a) महायान शाखा (b) वज्रयान शाखा
(c) तंत्रयान शाखा (d) वैष्णव शाखा
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

51. नव नालंदा महाविहार को यूनेस्को द्वारा कब विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया/गया था।

(a) 2019 (b) 2018
(c) 2016 (d) 2015
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

52. नव नालंदा महाविहार एक सम-विश्वविद्यालय (Deemed University) है। निम्नलिखित में से कौन से विषय की पढ़ाई सितंबर 2014 में यहां शुरू की गई है?

(a) स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज
(b) स्कूल ऑफ इकोलॉजी एनवायरमेंट
(c) पत्रकारिता
(d) गणितीय शोध
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

Copyright@ Bihar Naman Publishing House
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

53. विश्व का एकमात्र योग विश्वविद्यालय कहां स्थित है?

(a) उत्तर प्रदेश (b) झारखंड

(c) बिहार (d) नेपाल

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

54. बिहार में पिंडदान कहां कराये जाते है?

(a) राजगीर (b) गया

(c) पटना (d) हाजीपुर

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

55. निम्नलिखित में कौन सी नदी के तट पर बोधगया अवस्थित है?

(a) फल्गू (b) निरंजना

(c) अजय (d) किऊल

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

56. बोधगया स्थित बोधिवृक्ष को किसने क्षति पहुंचाया?

(a) मयंक (b) शशांक

(c) पूर्णांक (d) उदयनाथ

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

57. निम्नलिखित में से किस वर्ष यूनेस्को द्वारा महाबोधि महाविहार को विश्व-विसारत सूची में शामिल किया/गया था।

(a) 2001 (b) 2002

(c) 2003 (d) 2008

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

58. निम्नलिखित में से किस पौराणिक शहर को चीनी इतिहासकार 'व्यू' कहते थे?

(a) पाटलिपुत्र (b) राजगीर

(c) लिच्छवि (d) चिरांद

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

59. प्राचीन समय में पाटलिपुत्र नगर एक प्रमुख व्यपारिक केन्द्र था किंतु एक हूण राजा ने इस नगर को आग लगाकर नष्ट कर दिया, उसका नाम क्या था?

(a) बलपुत्रदेव (b) धर्मपाल

(c) दुर्देव (d) मोगली

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

60. प्राचीन पाटलिपुत्र का वर्तमान पटना नाम किसके द्वारा दिया गया है?

(a) धर्मपाल (b) भारत सरकार

(c) ब्रिटिश सरकार (d) शेरशाह सूरी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

61. बिहार में चौसा कहां स्थित है?

(a) रोहतास (b) कैमूर

(c) भागलपुर (d) किशनगंज

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

62. प्राचीन नगर चंपा निम्न में से कौन से महाजनपद की प्रशासकीय राजधानी थी?

(a) कोशल (b) अंग

(c) वज्जि (d) लिच्छवि

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

63. बिहार में स्थित उस पौराणिक/पुरातात्विक स्थल की पहचान करे जहां से नवपाषाणकालीन तथा तामग्रयुगीन पुरातात्विक अवशेष मिले है?

(a) मुंगेर (b) चिरांद

(c) रामपुरवा (d) लौरिया नंदनगढ़

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

64. निम्नलिखित में से बिहार का कौन सा शहर/प्रांत/क्षेत्र मध्यकाल में 'शहंशाहों का शहर' कहलाता था?

(a) पाटलिपुत्र (b) वैशाली

(c) पावापुरी (d) आरा

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

Copyright@ Bihar Naman Publishing House

65. नकटा जाफर बथान और गीताघर की पहाड़ियों में आदिमानवों द्वारा बनाए गए शैलचित्र आज भी देखे जा सकते हैं। बिहार में ये पहाड़ियां कहां अवस्थित है?
(a) सासाराम (b) कैमूर
(c) गया (d) मुंगेर
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

66. बिहार में बराबर की गुफाएं कहां अवस्थित है?
(a) गया (b) कैमूर
(c) किशनगंज (d) मुंगेर
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

67. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को उनके अवस्थित जिले से सही सुमेलित करे?

ऐतिहासिक स्थल	**जिले**
(a) रामपुरवा	1. नालंदा
(b) अपसढ़	2. पश्चिम चंपारण
(c) चिरांद	3. सारण
(d) पावापुरी	4. नवादा
(e) देव	5. औरंगाबाद

कूट

	A	B	C	D	E
(a)	1	2	3	4	5
(b)	4	1	3	2	5
(c)	2	3	1	4	5
(d)	3	4	5	2	1

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर

43. (d)	44. (c)	45. (b)
46. (a)	47. (b)	48. (e)
49. (e)	50. (b)	51. (c)
52. (e)	53. (c)	54. (b)
55. (b)	56. (b)	57. (b)
58. (a)	59. (c)	60. (d)
61. (e)	62. (b)	63. (b)
64. (d)	65. (a)	66. (a)
67. (b)		

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ Bihar Naman Publishing House

Ashokan Pillar Vaishali